औरतों की ताकत कम नहीं

सुहास कुमार

हम औरतों का जीवन अधिकतर डर में बीतता है। कभी समाज का डर, कभी रिश्तेदारों का डर। कभी परिवार वालों का डर और कभी धर्म का डर।

पर, क्या हम सुचमुच डरपोक हैं? या डर हमारे मन में बिठा दिया गया है!

हम लड़कियों को शुरू से सिखाते हैं कि उन्हें दब-ढंक कर रहना है। उनमें सहनशीलता होनी चाहिए। हम उन्हें अपनी बात कहने का हक भी नहीं देते। ज़िंदगी से जूझने के लिए जो ताकत चाहिए वह विकसित होने नहीं देते।

पर यदि हम अपने पैरों पर खड़ी हैं तो हमारे हाथों में ताकत है। अक्सर देखा गया है कि हम उस ताकत का इस्तेमाल नहीं कर पातीं। पैसा कमाने के बावजूद हम उसे कब, कैसे और कहां खर्च करना है नहीं जानतीं।

सोच-समझ कर लिया फैसला हमारी ताकत बन सकता है। हम उसे ठीक समझती हैं तो उस पर अड़ना होगा, उस पर अमल करना होगा।

दक्षिणपुरी बस्ती में रहने वाली शांति ने बताया कि जब उसके पति की मृत्यु हुई तब सबने कहा—"तुम कोई एक फल छोड़ दो।"

उसने कहा—"क्यों छोड़ दूं? क्या मेरा पति वापिस आकर उसे खाएगा? या यह फल उस तक पहुंचेगा? मैं नहीं छोड़ूंगी।" शांति ने फल नहीं छोड़ा।

कोई उस पर ज़ोर-जबर्दस्ती नहीं कर पाया। उसने अपने मन में महसूस किया कि वह चाहे तो मनचाही कर सकती है। उसने पढ़ना-लिखना

सीखा और अब एक स्वयंसेवी महिला संगठन में स्वास्थ्य कार्यकर्ता के रूप में काम कर रही है। उसने अपने सात बच्चों को पाला-पोसा। हर कदम उसे नई ताकत देता गया।

गलत रीति-रिवाज तोड़ें

जो रीति-रिवाज हमें कमज़ोर बनाते हैं उन्हें छोड़ना होगा। शुरुआत बेटियों के जन्म से करनी होगी। बेटियों को हम अनचाही क्यों मानें? उनके जन्म पर उतनी ही खुशी क्यों न मनाएं जितनी बेटों के जन्म पर? हम उन्हें शारीरिक और मानसिक विकास के पूरे मौके क्यों न दें? अगर

बेटी अपने पैरों पर खड़ी है तो क्या वह अपने मां-बाप का सहारा नहीं बनेगी?

अगर हमें यौन अत्याचार का सामना करना पड़ता है तो इसमें हमारा क्या दोष? शायद यही ऐसा अपराध है जिसमें पीड़ित व्यक्ति को ही अपराधी करार कर दिया जाता है। इससे बढ़कर अत्याचार क्या हो सकता है?

क्या घर के कामों में लगे रहना बेटी की ही जिम्मेदारी है? बेटे की नहीं। मां ही बेटों को सिर पर चढ़ाती है। घर में बेटे और बेटी को बराबर के काम करने की आदत डालें। यह भावना कि यह काम लड़कियों का है, लड़कों का नहीं गलत है। उसे न पनपने दें। पति-पत्नी के संबंधों में यही बात पत्नी की स्थिति कमजोर बनाती है।

बाल-विवाह, दहेज प्रथा, पर्दा-प्रथा, देवदासी प्रथा औरतों की स्थिति को कमजोर बनाती हैं। आज जब कानूनन ये गलत बातें हैं तब समाज हम पर इन बातों के लिए दबाव नहीं डाल सकता। कई रीति-रिवाज ऐसे चले आ रहे हैं जो औरतों की स्थिति कमजोर बनाते हैं। उन्हें दूर करना होगा।

अपने अधिकार लें

संपत्ति पर बेटी का अब कानूनन बराबरी का अधिकार है। बहनों को अपने भाइयों के लिए सपंत्ति नहीं छोड़नी चाहिए। वह हमारा अधिकार है। जब तक हम अपने अधिकारों को समझ कर उन्हें हासिल करने की कोशिश नहीं करेंगी तब तक हमारी ताकत नहीं बढ़ेगी।

हमारी मेहनत, हमारा हुनर, हमारी ताकतें हैं। यह बात अक्सर सुनी गई है कि औरत ही औरत की सबसे बड़ी दुश्मन है। इसका मर्म समझने की कोशिश करें। क्या हम स्वयं अपनी स्थिति के लिए जिम्मेदार नहीं हैं?

हम चाहें तो क्या ज़्यादा बच्चे पैदा करने पर रोक नहीं लगा सकतीं? हम चाहें तो क्या अपनी बेटियों को स्कूल नहीं भेज सकतीं? क्या हम उनकी काबलियत को बाहर आने का मौका देती हैं? क्या हम बहू और बेटी में भेदभाव करती हैं? यदि हम ऐसा न करें तो स्त्रियों का जीवन ज्यादा सुखकर होगा। जो बातें हमें अपनी सास की बुरी लगी थीं क्या वही बातें हमें अपनी बहू के साथ करनी हैं? अगर उसे इंसान के रूप में देखें, सिर्फ बहू के रूप में नहीं तो संबंध मधुर बनेंगे। वह घर का अधिक उपयोगी सदस्य भी बन सकेगी।

अधिकार छिनने न दें

पितृसत्ता वाला समाज तरह-तरह से अधिकार छीनने की कोशिश करता है। अगर बेटा बहू को पीटता है तो उसे हमें रोकना होगा। जिस सामाजिक ढांचे में औरत पर अत्याचार होता है, कल आपकी बेटी भी उसका शिकार बन सकती है। दहेज न लाने के कारण उसे भी जलाया जा सकता है। बांझ होने या केवल लड़कियां पैदा करने पर या अन्य कारणों से उसे भी सताया जा सकता है।

इन सब के मूल में है हमारा बेटी-बेटे को समान रूप से न पालना। जिस दिन माता-पिता दोनों को एक बराबर समझने लगेंगें, दोनों को समान शिक्षा और समान बढ़ावा देने लगेंगें, उस दिन से लड़ाकियों और औरतों की ताकत बढ़ने से कोई नहीं रोक सकेगा। □